International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 6, Issue 08, August 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

धर्मशास्त्र का काल-निर्धारण (200 ई.पू. - 900 ई. सन्)

डॉ० प्रीतम कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर , प्राचीन इतिहास विभाग
काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर,भदोही ।

सारांश :

'धर्मशास्त्र' के अंतर्गत प्रमुख स्मृति ग्रंथों के काल-निर्धारण की जटिलता और उनके ऐतिहासिक विकासक्रम का विवेचन करता है। अध्ययन का मुख्य केंद्र मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति और अन्य प्रमुख स्मृतियों के रचना-काल को साहित्यिक, आंतरिक एवं बाह्य साक्ष्यों के आधार पर सुनिश्चित करना है। शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि स्मृतियों का उत्कर्ष काल मुख्यतः 200 ई.पू. से 600 ईस्वी के मध्य रहा है। शोध पत्र में मेधातिथि, विश्वरूप जैसे टीकाकारों और पी.वी. काणे, के.पी. जायसवाल जैसे आधुनिक विद्वानों के मतों की समीक्षा करते हुए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि स्मृतियों का प्रभाव और उनकी प्रामाणिकता परवर्ती निबंध-ग्रंथों के युग तक निरंतर बनी रही है।

मुख्य शब्द (Keywords):

धर्मशास्त्र, मनुस्मृति, काल-निर्धारण, याज्ञवल्क्य स्मृति, आंतरिक साक्ष्य, बाह्य प्रमाण, स्मृति काल।

प्रस्तावना

स्मृतियों को धर्मशास्त्र मानकर धर्मशास्त्रकाल के निर्धारण में ग्रंथ संबंधी मतभेद विवाद उत्पन्न कर देते हैं। यदि धर्मशास्त्र के अंतर्गत वेदेत्तर ग्रंथों की मान्यता स्वीकार ली जाए तो महाभारत आदि महाकाव्य ग्रंथ भी धर्मशास्त्र के अंग के रूप में प्रतिष्ठित हो सकते हैं। महाभारत के आदिपर्व में इस महाकाव्य रचना को अर्थशास्त्र, कामशास्त्र तथा धर्मशास्त्र के रूप में वर्णित किया गया है। परन्तु अर्थशास्त्र एवं कामशास्त्र की श्रेणी में रखकर व्यास ने महाभारत के विशुद्ध धर्मशास्त्र ग्रंथ की मान्यता को समाप्त कर दिया है।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

धर्मशास्त्र का स्वरूप एवं काल-निर्धारण

ब्रह्मसूत्र मे भी स्मृति शब्द से तात्पर्य भगवद्गीता और महाभारत से लिया गया है। सूत्रकार ने स्मृति शब्द का 20 बार प्रयोग किया है जहां स्मृति शब्द गीता एवं महाभारत के अर्थ में प्रयुक्त है। सूत्रकार के मत से स्मृति का अर्थ होता है गीता अथवा महाभारत के समकक्ष शास्त्र। परन्तु उपर्युक्त मत-मतान्तर का भेद प्राचीन भारतीय इतिहास का अभिन्न अंग रहा है। इसे दृष्टि में न रखकर धर्मशास्त्र के अंग स्मृतियों को ही आधार मानकर धर्मशास्त्र के काल का निर्धारण शोध विषय का अंश है। कतिपय प्रमुख स्मृतियों के रचना संबंधी पक्ष पर प्रकाश डालकर काल निर्धारण का प्रयास अभीष्ट है।

मनुस्मृति: आदि एवं प्रमाणिक ग्रंथ

मनुस्मृति को आदि एवं सर्वाधिक प्रमाणिक धर्मशास्त्र ग्रंथ माना जाता है। अंगिरस ने लिखा है कि किसी भी स्मृति का मनुस्मृति के आदेश के विरूद्ध आचरण अनुचित है। मनु का उल्लेख वैदिक काल से ही प्राप्त होता है। ऋग्वेद में मनु को मानव जाति का पिता कहा गया है। किसी वैदिक कवि ने स्तुति की है कि वह मनु के मार्ग से च्युत न हो जाए। ऋग्वेद में ही मनु को प्रथम यज्ञ करने वाला निर्देशित किया गया है। शतपथ ब्राह्मण में मनु एवं प्रलय कथा का वर्ण है। वशिष्ठ और आपस्तम्ब नामक सूत्रकारों ने भी मनु का उल्लेख किया है। महाभारत में भी मनु को स्वयंम्भुव मनु तथा 'प्राचेतस मनु' कहा गया है।

उपर्युक्त साक्ष्यों से मनु और मनुप्रणीत शास्त्र का काल वैदिक काल से देखा जा सकता है। परन्तु केवल साहित्यिक साक्ष्य के आधार पर यह मान लेना असमीचीन होगा। मनुस्मृति को अधिकाधिक कौटिल्य अर्थशास्त्र के आस-पास की रचना माना जा सकता है क्योंकि दोनों के भाषा और सिद्धान्तों में पर्याप्त साम्य है। इस प्रकार मनुस्मृति के काल-निर्धारण में वाह्य एवं आन्तरिक साक्ष्यों के आधार पर ही निर्णय किया जा सकता है।

साक्ष्यों का विवेचन

- **बाह्य प्रमाण:**

मनुस्मृति की सर्वाधिक प्राचीन टीका मेधातिथि की है, जिसे 900 ई० सन् के लगभग माना जाता है। 'मृच्छकटिकम्' ने पापी ब्राह्मण के दण्ड के विषय में मनु को प्रमाण मानकर मृत्युदण्ड के स्थान पर निर्वासन

(देशनिष्काशन) का निर्देश दिया है। वल्लभी राजा धारसेन के एक अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि सन् 571 ई० में वर्तमान मनुस्मृति उपलब्ध थी। जैमिनी सूत्र के भाष्यकार शबर स्वामी ने भी मनु स्मृति को उद्धत किया है। इनको विद्वानों ने 500 ई० के पूर्व काल का भाष्यकार माना है। बृहस्पति ने (जिन्हें 500 ई० की लगभग प्रमुख धर्मशास्त्रकार माना जाता है) भी मनुस्मृति की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इस प्रकार इन वाह्य साक्ष्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि द्वितीय शताब्दी के बाद के अधिकतर रचनाकारों ने मनुस्मृति को प्रामाणिक माना है।

- **आन्तरिक प्रमाण:**

मनुस्मृति याज्ञवल्क्य स्मृति की पूर्वकालिक रचना है, क्योंकि मनुस्मृति की तुलना में याज्ञवल्क्य स्मृति अपेक्षाकृत अधिक सुगठित, प्रवाहशील, संक्षिप्त और पुनरूक्तिदोषरहित है। मनुस्मृति के 12 अध्याय एवं 2700 श्लोकों के स्थान पर मात्र 3 अध्याय और लगभग 1000 श्लोकों में उन सभी विषयों का यथेष्ट एवं यथोचित वर्णन कर दिया है जिसे मनुस्मृति में मनु ने वर्णित किया है। अनुष्टुप छन्द के संक्षिप्त एवं सारयुक्त श्लोकों में याज्ञवल्क्य स्मृति प्रणयन कर याज्ञवल्क्य ने शास्त्र प्रणयन की परिष्कृत कला का परिचय दिया है। मनु की अपेक्षा याज्ञवल्क्य का व्यवहार पक्ष समयानुसार व्यापक एवं स्वतः में परिपूर्ण हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि याज्ञवल्क्य स्मृति की रचना करने के पूर्व ऋषि याज्ञवल्क्य ने मनुस्मृति का अध्ययन किया होगा। इस प्रकार याज्ञवल्क्य स्मृति का काल कम से कम तीसरी शताब्दी निर्धारित है जिसके पूर्व मनु को रखा जा सकता है।

मनुस्मृति में विदेशी जातियों के रूप में यवन, कम्बोज, गान्धार, शक, पहलव आदि का उल्लेख है। इनमें से यवन, कम्बोज, गान्धार लोगों का विवरण अशोक के पांचवें प्रस्तर अनुशासन (शिलालेख) में भी आ चुका है। इस आधार पर मनुस्मृति को ई०पू० तीसरी शताब्दी से बहुत पूर्व नहीं रखा जा सकता। वर्तमान मनुस्मृति रचना, गठन एवं सिद्धान्तों की दृष्टि से गौतम, बौधायन एवं आपस्तम्ब धर्मसूत्रों से अधिक सुदृढ़ एवं परिष्कृत है। चूंकि धर्मसूत्रों का काल 600 से 300 ई० पूर्व निर्धारित है अतः मनुस्मृति भी ई०पू० द्वितीय शती की रचना मानी जा सकती है।

इस प्रकार विभिन्न साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि मनुस्मृति की रचना 200 ई०पू० से 200 ई० सन् के मध्य हुई होगी। रमाशंकर त्रिपाठी भी मानव धर्मशास्त्र का सर्जन ख्रिष्टीय संवत् से पूर्व मानते है। मनोरमा जौहरी ने भी मनुस्मृति को लगभग 200 ई० पूर्व में शुंगकाल की कृति निर्देशित किया है। अतः धर्मशास्त्र का प्रथम ग्रंथ होने से धर्मशास्त्र का प्रारम्भिक काल 200 ई० पूर्व से ही मानना उपयुक्त होगा।

परवर्ती स्मृतियों का कालक्रम

स्पष्टतया याज्ञवल्क्य स्मृति मनुस्मृति के बाद की कृति है अतः इसे 200 ई० पूर्व के पहले रखना अनुचित होगा। याज्ञवल्क्य स्मृति पर विश्वरूप की टीका प्रथम लिखित टीका मानी जाती है। विश्वरूप को नौवीं शती का टीकाकार माना जाता है। काणे ने लिखा है कि विश्वरूप की टीका में कई स्थलों पर ऐसी अभिव्यक्ति है जिससे ज्ञात होता है कि उसके पूर्व भी याज्ञवल्क्य स्मृति पर टीकाएं लिखी गई है। अतः याज्ञवल्क्य स्मृति का वर्तमान स्वरूप विश्वरूप से बहुत पूर्व ही स्थिर हो चुका था।

जालो ने 'नाणक' सिक्के के आधार पर याज्ञवल्क्य स्मृति को चौथी शताब्दी की कृति माना है। परन्तु जायसवाल ने इन सिक्कों का सम्बन्ध कुषाणों के स्वर्ण प्रकार के सिक्कों (नाणक सिक्कों) से स्थापित कर इस स्मृति का काल 150-200 ई० के मध्य निर्धारित किया है। विभिन्न साक्ष्यों से हम याज्ञवल्क्य स्मृति को प्रथम एवं द्वितीय ई० के मध्य की रचना मान सकते हैं।

पराशर स्मृति के उद्धरणों को विश्वरूप, मिताक्षरा, अपरार्क, स्मृतिचन्द्रिका तथा हेमाद्रि आदि ने उद्धत कर अपने मत व्यक्त किए है। अतः पराशर स्मृति की सत्ता 9वीं शती में स्थापित थी। पराशर को मनुस्मृति का ज्ञान था अतः पराशर को प्रथम शती से पांचवीं शती के मध्य का रखा जा सकता है। काणे ने साक्ष्यों के आधार पर नारद स्मृति को 100-400 ई० सन् के बीच तथा बृहस्पति को 200-400 ई० के बीच की रचना स्वीकार किया है। कात्यायन स्मृति को काणे ने 300-600 ई० के मध्य की कृति प्रतिपादित किया है।

स्मृति ग्रंथ संभावित रचना काल प्रमुख साक्ष्य

- मनुस्मृति 200 ई.पू. - 200 ई. शुंग काल, अशोक के शिलालेख
- याज्ञवल्क्य स्मृति 150 ई. - 200 ई. नाणक सिक्के, सुगठित विधि पक्ष
- नारद स्मृति 100 ई. - 400 ई. पी.वी. काणे का मत
- बृहस्पति स्मृति 200 ई. - 400 ई. मनुस्मृति के संदर्भ
- कात्यायन स्मृति 300 ई. - 600 ई. न्यायिक

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि प्रमुख स्मृतियाँ ई०पू० 200 से 600 ई० सन् तक लिखी गई। तदुपरान्त जिन स्मृतियों की रचना हुई वे पूर्वस्मृतियों की टीकाओं के अस्तित्व में आ जाने के कारण उतना अधिक प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण नहीं मानी गयी। इन स्मृतियों में काणे ने पितामह तथा पुलस्त्य को 400-700 ई० के लगभग माना है।

इस प्रकार हम धर्मशास्त्र के अन्तर्गत उन स्मृतियों को शामिल करते है जिनकी रचना 200 ई० पूर्व से लेकर 800-900 ई० सन् के मध्य तक होती रही। अतः एक दूसरे के पर्याय धर्मशास्त्र अथवा स्मृतियों की कालावधि अधिक से अधिक 200 ई० पूर्व से 10वीं शदी तक निर्धारित की जा सकती है। यदि निबन्ध ग्रंथों को भी स्मृतियों के अंग के रूप में स्वीकार कर लिया जाय तो इनकी रचना का काल 19वीं शती तक माना जा सकता है। परन्तु ये टीकाएं और निबन्ध धर्मशास्त्र नहीं अपितु धर्मशास्त्र (स्मृति ग्रंथों) के प्रतिपाद्य ग्रंथ माने जाएंगे ठीक उसी प्रकार जैसे कि स्मृतियों को वेद का प्रतिपाद्य ग्रंथ माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. काणे, पी. वी.: धर्मशास्त्र का इतिहास (हिन्दी अनुवाद), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. त्रिपाठी, रमाशंकर: प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. जायसवाल, के. पी.: Manu and Yajnavalkya: A Comparison and a Contrast, Calcutta.
4. जौहरी, मनोरमा: प्राचीन भारत में वर्णाश्रम व्यवस्था, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. मनुस्मृति: (मेधातिथि के 'मनुभाष्य' सहित), चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
6. जालो, जूलियस: Hindu Law and Custom, Calcutta.